अध्यक्ष का सन्देश

मैं सर्वप्रथम राष्ट्रीय शिक्षुता प्रशिक्षण योजना को कार्यान्वित करने वाले सभी हितधारकों को उनके अनवरत समर्थन और सहयोग के लिए अपनी कृतज्ञता व्यक्त करना चाहता हूँ। 1968 में इस बोर्ड की स्थापना के बाद से व्यावहारिक प्रशिक्षण बोर्ड (पू.क्षे.) शिक्षु (संशोधन) अधिनियम, 1973 एवं 1986 के अंतर्गत केंद्र सरकार के प्रमुख कौशल विकास कार्यक्रम के महत्वपूर्ण भागीदारों में से एक बन गया है। बीओपीटी (ईआर) पिछले चार दशकों में स्नातक, डिप्लोमा इंजीनियरों और 10 (+2) व्यावसायिक प्रमाणपत्र धारकों के लिए गुणवत्ता कौशल विकास के लिए अपनी प्रतिबद्धता के लिए जाना जाता है। व्या.प्र.बो. ने पूर्वी क्षेत्र में 1980 में लगभग 400 शिक्षुओं से वर्ष 2015-16 ताल 15000 से अधिक शिक्षुओं को प्रशिक्षण प्रदान करने के अपने वार्षिक क्षमता में लगातार वृद्धि की है इस प्रकार से राष्ट्र को अपनी सेवा प्रदान करने के क्षेत्र में बोर्ड ने सराहनीय कार्य किया है।

व्या.प्र.बो. (पू.क्षे.) की प्राथमिक भूमिकाओं भूमिकाओं में से एक पूर्वी क्षेत्र के तकनीकी संस्थानों और उद्योगों के बीच एक मजबूत समन्वय को विकसित करना है जो प्रतिस्पर्धी बाजार में उनके विकास और स्थायित्व के लिए तकनीकी रूप से इस प्रकार के योग्य कुशल मानव संसाधनों की आवश्यकता होती हैं। यह एक भूमिका है जिसे हम यहां व्या.प्र.बो. (पू.क्षे.) में बहुत गंभीरता से लेते हैं और जो तकनीकी और सॉफ्ट-कौशल विकास के माध्यम से हमारे शिक्षओं को दिए गए प्रशिक्षण की प्रकृति को निर्धारित करता है।

भविष्य में देखते हुए एक बात निश्चित है - कुशल मानव शक्ति एक प्रमुख संसाधन होगा और इसकी मांग भारत और सम्पूर्ण विश्व में होगी। हमारी चुनौती न केवल उद्योगों में और अधिक प्रशिक्षण सुविधाएं बनाने के लिए होंगी बल्कि कार्यस्थलों पर प्रशिक्षण की गुणवत्ता में सुधार करने के लिए उद्योगों के मार्गदर्शन के लिए भी होगा। इस प्रकार, यह उन विचारों को उत्पन्न करना है जो अंततः गुणवत्ता कौशल विकास प्रदान करके समाज को लाभ पहुंचाएंगे और लोगों को उन क्षेत्रों में काम करने के लिए प्रशिक्षित करेंगे जहां उनके विशेष ज्ञान और कौशल के लिए उनके महत्व को निर्धारित किया जाएगा।

21वीं शताब्दी की सोसाइटी को ज्ञान आधारित सोसाइटी के रूप में जाना जाता है। परिवर्तन तेजी से हो रहा हैं और ज्ञान और कौशल पर जोर दिया जा रहा है। व्या.प्र.बो. (पू.क्षे.) में हम विद्यार्थियों के अनुकूल और छात्र-केंद्रित प्रतिमान तैयार करके "ऑन-द-जॉब" प्रशिक्षण में नए पद्धति के सृजन के दर्शन का सख्ती से पालन करते हैं। हमारा उद्देश्य पाठ्यक्रम के माध्यम से छात्रो को तकनीकी संस्थानों द्वारा जो शिक्षा दी जा रही है तथा कौशल के क्षेत्र में उद्योग की आवश्यकता के बीच के अंतर को दूर करना है। इस अंतर को तकनीकी छात्रों तथा प्रशिक्षण स्थापनाओं के लिए एक सकारात्मक स्थिति का सृजन कर एक कौशल आधारित समाज को विकसित करने में एक-दुसरे को मदद कर दूर किया जा सकता है।

उद्योगों में तकनीकी छात्रों के एक वर्ष के शिक्षुता प्रशिक्षण के दौरान हम लगातार एक वर्ष के बाद बेहतर कुशल कर्मियों को विकसित करने के उद्देश्य से प्रशिक्षण की गुणवत्ता की निगरानी करते हैं जो स्वतंत्रता, रचनात्मकता, साथ ही साथ व्यावहारिक क्षमता प्रदर्शित कर सकते हैं और जो समाज विभिन्न क्षेत्रों में योगदान दे सकते हैं। पिछले कुछ वर्षों में हमने इस प्रणाली में सूचना और संचार प्रौद्योगिकी को लागू करके विभिन्न सुधार किए हैं और अब भी हम कौशल विकास की गुणवत्ता को और सुदृढ़ करने और सुधारने के लिए प्रयास कर रहे हैं और ऐसा करना जारी रखेंगे। इन लक्ष्यों को प्राप्त करने की दिशा में आपके निरंतर समर्थन की मैं सराहना करता हूँ।

प्रो. वीरेंद्र कुमार तिवारी
अध्यक्ष, व्या.प्र.बो.(पू.क्षे.)